Taxable Capacity

करदेय क्षमता

करदेय क्षमता से आशय किसी विशेष समुदाय की कर देने की अधिकतम क्षमता अथवा सामर्थ्य से होता है। Sir Josiah Stamp के अनुसार "करदेय क्षमता से आशय उस अधिकतम धनराशि से है जो किसी देश के नागरिक दुखी तथा पतित जीवन बिताए बिना और आर्थिक संगठन को अधिक अस्तव्यस्त किये बिना सरकारी खर्चों के लिए दे सके।"

लेकिन इस परिभाषा की यह कहकर आलोचना की गई कि व्यक्ति के सुख दुःख की सीमा क्या है तथा मानसिक परिस्थितियों का उचित ढंग से मूल्यांकन करना कठिन है। Prof Findlay Shirras के अनुसार "करदेय क्षमता निचोड़ की सीमा है यह न्यूनतम उपभोग के ऊपर उत्पादन का कुल अधिक्य है, जो जीवन स्तर को प्रभावित किये बिना उतना ही उत्पादन करने के लिए आवश्यक हो।"

शिराज ने अपनी परिभाषा में "न्यूनतम उपभोग" का प्रयोग किया है जो बड़ा ही संदिग्ध है क्योंकि न्यूनतम उपभोग की क्या सीमा होगी तथा व्यक्तियों के रहन-सहन का क्या आवश्यक स्तर होगा, इसे निश्चित नहीं किया जा सकता है। अतः इन सभी परिभाषाओं को पूर्ण रूप संतोषजनक नहीं माना जा सकता है।

इन्हीं आलोचनाओं के कारण Dalton ने लिखा है "Taxable Capacity is a dim and confused ~~concep~~ conception" उन्होंने पुनः लिखा है "Taxable Capacity is an economic myth".

बाद में करदेय क्षमता की धारणा की विस्तृत व्याख्या करने के लिए इसे दो भागों में बाँटा जा सकता है।

1. निरपेक्ष करदान क्षमता (Absolute Taxable Capacity)
2. सापेक्षिक करदान क्षमता (Relative Taxable Capacity)

Scanned with CamScanner

1. Absolute Taxable Capacity

निरपेक्ष करदेय क्षमता से आशय उस अधिकतम धनराशि से है जो कि किसी भी प्रकार के प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ही समुदाय से प्राप्त की जा सकती है। प्रो० शिराज के अनुसार " केवल जीवन यापन को छोड़कर सब कुछ कर के रूप में लेना निरपेक्ष करदान क्षमता है ऐसी स्थिति में करदान क्षमता निचोड़ की सीमा है। (Absolute Taxable Capacity is the limit of Squeezability) अर्थात यह कहा जा सकता है कि करदाता को उस सीमा तक तो जाना चाहिए जहाँ पर पहुँचने के बाद करदाता के पास कुछ भी शेष न बचे। Dalton के अनुसार "निरपेक्ष करदान क्षमता का कोई व्यवहारिक लाभ नहीं है क्योंकि इसकी निश्चित माप नहीं की जा सकती। यह एक कोरा भ्रम है- जिसमें भयानक भूल होने की सदा संभावना होती है।"

2. Relative Taxable Capacity

सापेक्षिक करदान क्षमता का अर्थ है अनुपातिक करदान सामर्थ्य अर्थात एक समुदाय की तुलना में दूसरे समुदाय की करदान सामर्थ्य। उदाहरण के लिए निर्धनों की तुलना में धनी व्यक्ति अधिक करभार वहन कर सकते हैं। डाल्टन ने कहा है कि यदि सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है तो धनी करदाता द्वारा अदा किये जाने वाले अनुपात में तो वृद्धि होनी चाहिए और निर्धन द्वारा अदा किये जाने वाले अनुपात में कमी होनी चाहिए।

इसप्रकार यदि दो पृथक-पृथक समुदाय को किसी सामुहिक व्यय का भार उठाना है तो यह उनकी सापेक्ष करदान सामर्थ्य के अनुपात में हो सकता है। यह सिद्धान्त एक संघीय शासन प्रणाली के सरकार में आमतौर पर लागू किया जाता है जहाँ भिन्न-भिन्न

Scanned with CamScanner

राज्यों को देश के सामूहिक आय में अपना योगदान देने की आशा की जाती है।

Measurement of Taxable Capacity

करदेय क्षमता राष्ट्रीय लाभांश या राष्ट्रीय आय पर निर्भर होती है। प्रो० मार्शल ने राष्ट्रीय आय की परिभाषा इस प्रकार दी है। "किसी देश का श्रम और उसकी पूंजी, अपने प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील होकर, प्रतिवर्ष भौतिक व अभौतिक पदार्थों तथा सब प्रकार की सेवाओं का एक निश्चित योग उत्पन्न करते हैं यही देश की राष्ट्रीय आय होती है।" इसप्रकार देश के अन्दर होने वाले समस्त कुल उत्पादन (Aggregate net production) को राष्ट्रीय आय कहा जाता है। अतः राष्ट्रीय आय ही देश के प्रत्येक व्यक्ति की आय का मुख्य स्रोत है।

प्रो० शिराज ने करदान - क्षमता को मापने की दो विधियाँ बताई है -

① कुल आय विधि (Aggregate Income method)

इस विधि के अन्तर्गत सभी व्यक्तियों की आय को जोड़ दिया जाता है जो राष्ट्रीय आय के रूप में होती है। यदि राष्ट्रीय आय बढ़ती है तो करदान - क्षमता भी बढ़ेगी अन्यथा नहीं।

② उत्पादन विधि (Production method)

इस विधि के अन्तर्गत सभी स्त्रोतों से प्राप्त उत्पादन को ज्ञात करने के बाद प्रचलित मुल्यों के आधार पर उत्पादन का मुल्यांकन कर लिया जाता है। इसप्रकार जो राशि प्राप्त होगी उसे राष्ट्रीय आय कहा जायेगा। यदि शुद्ध उत्पादन बढ़ता है, तो करदान - क्षमता बढ़ेगी अन्यथा घटेगी।

परन्तु इन दोनों रीतियों में यदि किसी एक रीति को अपनाया जाए तो उसमें अनेक कठिनाईयाँ

Scanned with CamScanner

लागत आती है। सच तो यह है कि करदाताओं के त्याग की माप काल्पनिक एवं अव्यवहारिक है अतः उचित यह होगा कि इन दोनों ही रीतियों में जो भी जहाँ उपयुक्त हो उसे वहीं लागू किया जाए।

Determination of Taxable Capacity

करदान-क्षमता का निर्धारण

करदेय क्षमता अनेक तत्वों पर निर्भर करता है जो निम्नलिखित है —

1. राष्ट्र के आय एवं धन के आधार पर (Size of Income and Wealth of the Nation)

किसी भी देश का करदान क्षमता उसकी राष्ट्रीय आय तथा धन के आधार पर निर्भर होती है। और वह आकार स्वयं अनेक ऐसे तत्वों पर निर्भर होता है जैसे - उस देश के प्राकृतिक साधनों व उनके समुचित उपयोग तथा आय की किस्म आदि। किसी देश की राष्ट्रीय आय जितनी अधिक होती है उसकी करदान क्षमता भी उतना ही अधिक होती है।

2. जनसंख्या का आकार तथा उनकी वृद्धि की दर (Size and Rate of Growth of Population)

किसी देश की करदेय क्षमता का निर्धारण केवल वहाँ की राष्ट्रीय आय ही नहीं करती, बल्कि उस देश की जनसंख्या की मात्रा तथा उसकी वृद्धि की दर से प्रभावित होती है। जिस देश की जनसंख्या जितनी अधिक होगी उसकी करदेय क्षमता उतनी ही कम होगी। और विपरीत स्थिति में इसका उल्टा होगा। परन्तु यह कथन सदा ठीक नहीं है यदि आय का वितरण समान हो

Scanned with CamScanner

तो लोगों की करदान क्षमता अधिक होगी।

3. आय और धन का वितरण
(Distribution of Income and Wealth)

देश की आय तथा धन का वितरण भी लोगों की करदेय क्षमता को प्रभावित करता है। चूंकि एक धनी समुदाय कराधान की एक अपेक्षाकृत ऊँचा प्रतिशत अदा कर सकता है अतः आय के वितरण की एक ऐसी व्यवस्था जो कि कुछ थोड़े से लोगों के हाथों में ही धन को केन्द्रीत करती है। उस व्यवस्था के मुकाबले जो आय का न्यूनाधिक रूप में समान वितरण करती है। उसकी कर अदा करने की योग्यता अधिक होती है।

4. कराधान का स्वरूप
(Pattern of Taxation)

करदेय क्षमता इस बात पर भी निर्भर करती है कि कर किस रूप में तथा किस तरीके से लगाये जाते है। कर प्रणाली का आधार जितना अधिक व्यापक होता है करदान क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी। A. Moray ने इस तथ्य को निम्नलिखित चित्र द्वारा प्रस्तुत किया है—

Scanned with CamScanner

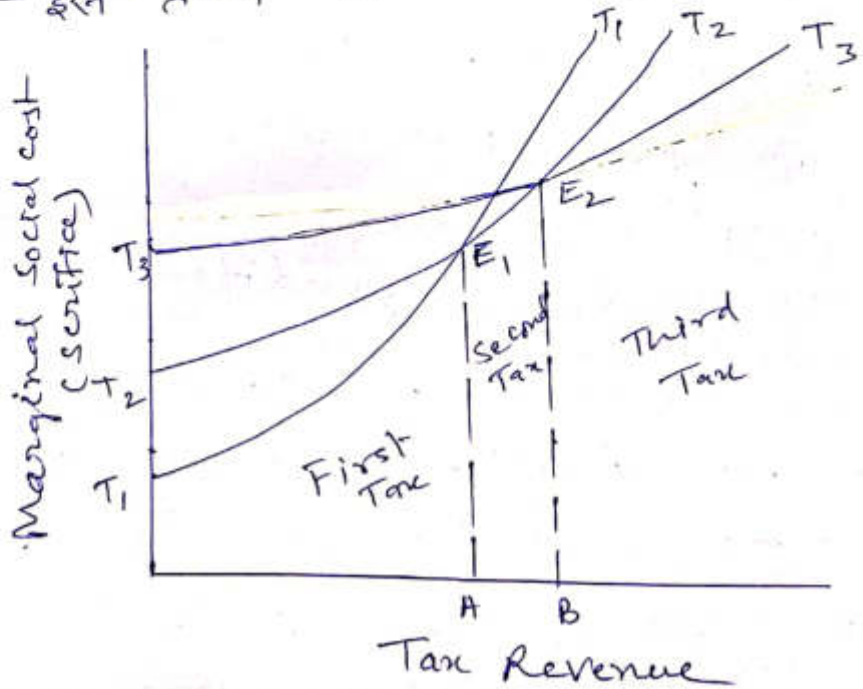

उपर के चित्र से स्पष्ट है कि जब T_1T_1 तथा T_2T_2 सीमान्त सामाजिक लागत एक दूसरे को E_1 बिन्दु पर काटते है तो पहला कर अपनी अधिकतम सीमा क्षमता पर पहुँच जाता है इस स्थिति में OA कर आय प्राप्त होता है। अधिक आय प्राप्त करने के लिए जब अधिक कर लगाये जायेंगे तो T_2T_2 तथा T_3T_3 ऐसा एक दूसरे को E_2 बिन्दु पर काटते है। तो द्वितीय कर अपनी अधिकतम सीमा को प्राप्त कर लेता है। जिससे OB कर आय प्राप्त होती है। इसीप्रकार और अधिक आय प्राप्त करने के लिए तीसरा कर लगाया जा सकता है। अतः एकल कर प्रणाली से बहुल कर प्रणाली अधिक अच्छी समझी जाती है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करो का समायोजन करदेय क्षमता को बढाता है।

5. आय की स्थिरता
(Stability of Income)

जिन देशों में लोगों की आय स्थिर होती है वहाँ की करदेय क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है। कृषि प्रधान देशों के मुकाबले औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में लोगो की आय अधिक स्थिर होती है।

6. सरकारी व्यय की प्रकृति
Nature of Public Expenditure

किसी देश की करदेय क्षमता सरकारी खर्च की प्रकृति से भी प्रभावित होती है। यदि करारोपण द्वारा एकत्र आय को उत्पादक कार्यों पर खर्च किया जाता है तो करदेय क्षमता बढ़ती है जबकि अनुत्पादक कार्यों पर

Scanned with CamScanner

किया गया सरकारी व्यय करदेय क्षमता को घटाता है।

7. करदाता की मनःस्थिति
(Psychology of the Taxpayer)

करदाताओं की मनः स्थिति का भी करदेय क्षमता के निर्धारण में काफी योगदान रहता है। नागरिकों में सरकार के प्रति जितनी अधिक श्रद्धा और देशभक्ति होगी तथा सरकारी नीतियों का जितना अधिक समर्थन प्राप्त होगा उतना ही ~~अधिक~~ अधिक जनता की करदान सामर्थ्य बढ़ेगी।

8. लोगों का जीवन स्तर
(Standard of Living of the People)

करदेय क्षमता लोगों के जीवन स्तर पर भी निर्भर होता है। और जीवन स्तर उपभोग व्यय पर निर्भर होता है। जिन लोगों का उपभोग व्यय जितना ऊंचा होता है उनके कर देने की क्षमता भी उतनी ही अधिक होती है।

9. प्रशासनिक कार्यकुशलता
(Administrative Efficiency)

प्रशासन की कार्यकुशलता से भी करदेय क्षमता प्रभावित होती है। यदि कर एकत्र करने वाले सरकारी तंत्र समरूप कर वसूलते है तो सभी करदाता ईमानदारी से करों का भुगतान करेंगे अर्थात उनकी करदेय-क्षमता बढ़ जायेगी।

10. आर्थिक स्थिति
(Economic Stituation)

तेजी की अवधि में अथवा व्यापार-चक्र के समृद्धिकाल में, लोगों की करदेय क्षमता बढ़ जाती है। इसके विपरीत मन्दी की स्थिति में लोगों की करदेय

Scanned with CamScanner

क्षमता घट जाती है।

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि करदेय क्षमता का निर्धारण उत्पादन की कुल बचत (surplus) द्वारा किया जाता है या कि न्यूनतम उपभोग पर उत्पादन की अधिकता से निर्मित होती है। इसके अलावा करदेय क्षमता इस बात पर भी निर्भर करती है कि सरकारी आय देश के अन्दर खर्च की जा रही है या बाहर। अतः करदेय क्षमता आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक तत्वों से निर्धारित होता है।

—×—

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College

Scanned with CamScanner